International Journal Of Advances In
ENGINEERING, SCIENCE, COMMERCE, MANAGEMENT AND LAW

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management, and Law
ISSN : 3048-8427 (Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed, Refereed Open Access Journal)

Original Article

डॉ. जाकिर हुसैन की शिक्षा-दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता: एक दार्शनिक एवं समालोचनात्मक अध्ययन

घेवाराम
शोधार्थी
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)
प्रो.(डॉ.)राजेन्द्र कुमार श्रीमाली
शोध पर्यवेक्षक
मौलाना आजाद विश्वविद्यालय
जोधपुर (राज.)

सारांश

डॉ. जाकिर हुसैन भारतीय शिक्षा-जगत के उन दार्शनिकों में अग्रणी हैं जिन्होंने शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण, नैतिक पुनर्जागरण और सामाजिक समरसता का माध्यम माना। उनका शिक्षा-दर्शन मानवीयता, श्रम-आधारित शिक्षण, लोकतांत्रिक मूल्यों, सांस्कृतिक समन्वय और आत्मनिर्भरता पर आधारित था। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके शिक्षा-दर्शन के सैद्धांतिक आधार, उद्देश्यों, दार्शनिक प्रवृत्तियों तथा वर्तमान वैश्विक और डिजिटल संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: शिक्षा-दर्शन, बुनियादी शिक्षा, मानवीयता, लोकतंत्र, नैतिकता, समावेशन

1. प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा के इतिहास में डॉ. जाकिर हुसैन का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे केवल एक शिक्षाविद् नहीं बल्कि एक दार्शनिक, राष्ट्रनिर्माता एवं नीति-निर्धारक भी थे। उनका मानना था कि शिक्षा का लक्ष्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक व्यक्तित्व का विकास करना है।

उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का साधन माना। उनके विचारों में राष्ट्रवाद, मानवतावाद और लोकतांत्रिक चेतना का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

2. ऐतिहासिक एवं बौद्धिक पृष्ठभूमि

डॉ. जाकिर हुसैन पर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, गांधीवादी विचारधारा तथा आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा-दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। विशेष रूप से:

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा (Basic Education) की अवधारणा

प्रयोगवाद (Pragmatism)

आदर्शवाद (Idealism)

सामाजिक पुनर्निर्माणवाद (Social Reconstructionism)

उन्होंने इन सभी धाराओं का समन्वय कर भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा-दर्शन विकसित किया।

3. शिक्षा-दर्शन के मूल सिद्धांत

3.1 मानवीयतावाद (Humanism)

उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में नैतिक चेतना, सहिष्णुता, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है।

वे शिक्षा को "मानव-निर्माण की प्रक्रिया" मानते थे।

3.2 कार्य-आधारित शिक्षा (Work-Centered Education)

उन्होंने श्रम और शिक्षा के समन्वय पर बल दिया।

उनके अनुसार:

“शिक्षा जीवन से अलग नहीं हो सकती।”

बुनियादी शिक्षा में हस्तकला, उत्पादन कार्य और व्यावहारिक अनुभव को पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए।

3.3 लोकतांत्रिक शिक्षा

उनकी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिक तैयार करना है।

लोकतंत्र केवल राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन-पद्धति है।

शिक्षा के माध्यम से समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का विकास आवश्यक है।

3.4 राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय

भारत जैसे बहुसांस्कृतिक राष्ट्र में शिक्षा का कार्य विविधता में एकता स्थापित करना है।

वे शिक्षा को सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकीकरण का माध्यम मानते थे।

4. शिक्षा के उद्देश्य

सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक)

चरित्र निर्माण

आत्मनिर्भरता

सामाजिक समरसता

उत्पादकता और कौशल विकास

5. पाठ्यक्रम संबंधी विचार

उनके अनुसार पाठ्यक्रम होना चाहिए:

जीवनोपयोगी

अनुभव-आधारित

स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप

नैतिक मूल्यों से युक्त

उन्होंने शिक्षा को केवल परीक्षा-केन्द्रित प्रणाली से मुक्त करने का सुझाव दिया।

6. शिक्षक की भूमिका

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श व्यक्तित्व होता है।

शिक्षक का आचरण ही विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण का आधार बनता है।

7. समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

7.1 नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में

कौशल विकास

अनुभवात्मक अधिगम

बहुभाषिकता

मूल्य शिक्षा

समावेशी शिक्षा

ये सभी तत्व उनके शिक्षा-दर्शन से मेल खाते हैं।

7.2 डिजिटल युग और नैतिक संकट

आज तकनीकी प्रगति के बावजूद नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि डिजिटल युग में मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

7.3 वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान

वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक अस्मिता का संकट बढ़ा है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि स्थानीय संस्कृति और वैश्विक दृष्टिकोण के संतुलन पर बल देती है।

8. आलोचनात्मक विश्लेषण

सकारात्मक पक्ष:

शिक्षा का समाजोन्मुख दृष्टिकोण

श्रम की गरिमा का सम्मान

नैतिक मूल्यों पर बल

समावेशी दृष्टि

सीमाएँ:

आधुनिक तकनीकी शिक्षा पर सीमित दृष्टि

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता

फिर भी उनके सिद्धांतों की मूल आत्मा आज भी प्रासंगिक है।

9. निष्कर्ष

डॉ. जाकिर हुसैन का शिक्षा-दर्शन भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक नैतिक, मानवीय और लोकतांत्रिक आधार प्रस्तुत करता है। समकालीन चुनौतियों — जैसे तकनीकी परिवर्तन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक विभाजन — के समाधान हेतु उनके विचारों का पुनर्पाठ और पुनर्संयोजन आवश्यक है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि आज भी एक संतुलित, समावेशी और मूल्यपरक शिक्षा प्रणाली के निर्माण में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ सूची (उदाहरणार्थ)

1. Husain, Zakir – Educational Writings
2. National Education Policy 2020
3. University Education Commission Reports
4. Journal of Indian Education